Dr. Swarnim Ghosh
(Assistant Professor)
[Mathematical Economics]
Dept. Of Economics
Govt. Degree college
Jakhhini, Varanasi
****
Mob: 9451218739
****
E-mail:
swarnimghosh@gmail.com
****

ECONOMICS
(अर्थशास्त्र)

बी.ए - प्रथम वर्ष (सेमेस्टर – प्रथम)

कोर्स-1 (मेजर)

इकाई: प्रथम

Unit –first

PRODUCTION POSSIBILITY CURVE AND CONCEPT OF OPPORTUNITY COST

उत्पादन संभावना वक्र तथा अवसर लागत की अवधारणा

स्वघोषणा

(Disclaimer/Self-Declaration)

“यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है | आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग प्रतिबंधित है | सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नही करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे | इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है |”

“The content is exclusively meant for academic purposes and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/ commercial purpose is strictly prohibited. The user of this content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge.”

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर2020

मूल शब्द (keywords):

1. सीमित साधन
2. बहु-प्रयोगात्मक साधन
3. सर्वश्रेष्ठ विकल्प
4. मौद्रिक लागत
5. उत्पादन संभावना वक्र
6. बढ़ती हुई अवसर लागत
7. सीमांत अवसर लागत

अवसर लागत : अर्थ (MEANING OF OPPORTUNITY COST)

वास्तव में अवसर लागत का विचार साधनों की सीमितता से उत्पन्न चयन की समस्या पर आधारित है | मनुष्य की आवश्यकताएं अनंत हैं और साधन सीमित है |जहाँ मानवीय आवश्यकता उत्पन्न होती है वहीँ अवसर छिपा रहता है | अतः अधिकांश साधनों का वैकल्पिक प्रयोगकर ही हम संतुष्टि प्राप्त कर सकते हैं | अर्थशास्त्र में अवसर लागत से अर्थ किसी एक वस्तु की अतिरिक्त मात्रा की अवसर लागत से है जो दूसरी वस्तु की त्याग की गयी मात्रा के कारण होती है |अर्थात साधन विशेष के वैकल्पिक प्रयोग के अवसर के त्याग को ही अर्थशास्त्र में अवसर लागत कहा जाता है |

उदाहरण(EXAMPLE) :

(a) माना कि कोई ड्राईवर है जो कार , बस, ट्रक यहाँ तक कि वह जीप भी चला सकता है परन्तु वह एक समय में कोई एक कार्य ही कर सकता है | यदि वह बस चलाने के लिए नियुक्त किया जाता है तो उसे अन्य दुसरे विकल्पों जैसे कार , जीप, ट्रक आदि चलाने के अवसर का त्याग करना पड़ेगा | अर्थात कार चलाने के अवसर का त्याग ही उसके लिए बस चलाने के लिए अवसर लागत कहलाएगी | यही कारण है की अवसर लागत को अवसर हानि भी कहा जाता है |

(OPPORTUNITY COST IS ALSO CALLED OPPORTUNITY LOST)

(b) यदि एक किसान १५० क्विंटल गेहूं का उत्पादन कर रहा है परन्तु साथ ही वह उत्पादन के इन्हीं साधनों का प्रयोग कर २०० क्विंटल चावल भी उत्पन्न कर सकता है | ऐसी स्थिति में १५० क्विंटल गेहूं की अवसर लागत २०० क्विंटल चावल होगी |

वास्तविक लागत के रूप में अवसर लागत(OPPORTUNITY COST AS A REAL COST) : वास्तविक लागत के रूप में अवसर लागत को वैकल्पिक लागत के दृष्टि से देखा जाता है |अवसर लागत में हम उत्पादन प्रक्रिया में लगे त्याग या कष्ट का मापांकन न कर सर्वश्रेष्ठ विकल्प के त्याग का मूल्यांकन करते है | इन्हीं अतिरिक्त या वैकल्पिक अवसरों के त्याग को अवसर लागत की संज्ञा दी गयी है या यूँ कहें एक अवसर का चयन करने पर दुसरे सर्वश्रेष्ठअवसर का किया गया त्याग ही अवसर लागत कहलाता है |

अवसर लागत या विकल्प लागत की परिभाषाएं (DEFINITIONS OF OPPORTUNITY COST) : अवसर लागत की अवधारणा की कुछ मुख्य परिभाषाएं निम्नवत हैं :

1. प्रो. बेन्हम के अनुसार ---” किसी वस्तु की अवसर लागत वह दूसरा सर्वश्रेष्ठ विकल्प है जिसका उन्हीं साधनों से या उनके समान उतनी ही मौद्रिक लागत के साधनों के समूह से उसकी बजाय उत्पादन किया जा सकता था |”

2. कोल के अनुसार----” एक कार्य के चयन द्वारा विकल्प अवसर के त्याग का मूल्य कार्य विशेष की विकल्प लागत या अवसर लागत है “|

3. फ्रेडरिक वॉन वायसेर ने अपनी प्रसिद्द किताब “ THEORY OF SOCIAL ECONOMY” में विकल्प लागत शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है ----” दुसरे लाभदायक विकल्पों को नजरअंदाज करते हुए , जब एक विकल्प को अपनाया जाये जिससे कोई मौद्रिक लाभ न हो तो उसको अवसर या विकल्प लागत कहा जाता है |” उपुर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययनसे पता चलता है कि अवसर लागत की अवधारणा साधनों की कमी और चुनाव के बीच के सम्बन्ध को बताती है और सीमित संसाधनों के बेहतर प्रयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है |

सीमांत अवसर लागत या सीमांत प्रतिस्थापन्न या विस्थापन्न दर की अवधारणा - CONCEPT OF MARGINAL OPPORTUNITY COST OR MARGINAL RATE OF SUBSTITUTION (MRSxy) :

एक वस्तु की सीमांत अवसर लागत किसी दुसरे वस्तु की वह मात्रा है जिसे पहली वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए छोड़ना पड़ता है |इसे सीमांत प्रतिस्थापन्न दर या विस्थापन्न दर भी कहा जाता है | अर्थात X वस्तु के उत्पादन में वृद्धि के लिए y वस्तु की इकाईयों के त्याग की दर को सीमांत अवसर लागत कहा जाता है |

संकेत के रूप मं ,
सीमांत अवसर लागत (MRSxy) = वस्तु y में परिवर्तन / वस्तु x में परिवर्तन

बढती हुई सीमांत अवसर लागत (INCREASING MARGINAL OPPORTUNITY COST)---
यदि साधनों को एक वस्तु के उत्पादन से हटा कर दूसरी वस्तु के उत्पादन में लगायें तो हमें ऐसी स्थिति में कम और कम कुशलता वाले साधनों को ही हटा कर उत्पादन करना पड़ेगा | इससे सीमांत अवसर लागत बढने लगती है | जिसे रूपांतरण की सीमांत दर (MARGINAL RATE OF TRANSFORMATION) भी कहा जाता है | फलतः किसी एक वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की अधिकाधिक इकाईयों का त्याग करना पड़ता है |

इस प्रकार , निम्नाकित रेखाचित्र से स्पष्ट है कि प्रारंभ में y वस्तु का उत्पादन OY है और x वस्तु का उत्पादन OX है लेकिन जब कुछ संसाधनों को x वस्तु से हटाकर y वस्तु के उत्पादन में हस्तांतरित किया जाता है तो ऐसी स्थिति में ;
संकेत के रूप में ; सीमांत अवसर लागत = वस्तु y के उत्पादन में हानि(YY_1) /वस्तु x के उत्पादन नें लाभ (XX_1) के बराबर होगी |ऐसा सीमांत अवसर लागत के बढने के कारण होता है क्यूंकि जैसे –जैसे उत्पादन बढाया जाता है , वैसे वैसे उस वस्तु का उत्पादन करने वाले साधनों की उत्पादकता कम होती जाती है जिससे एक वस्तु की प्रत्येक इकाई का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की अधिक से अधिक इकाइयों का त्याग करना पड़ता है |

MARGINAL OPPORTUNITY COST (MOC) =

LOSS OF OUTPUT Y /GAIN OF OUTPUT X =

$YY_1/XX_1 = AB/BC = \Delta y/\Delta x$

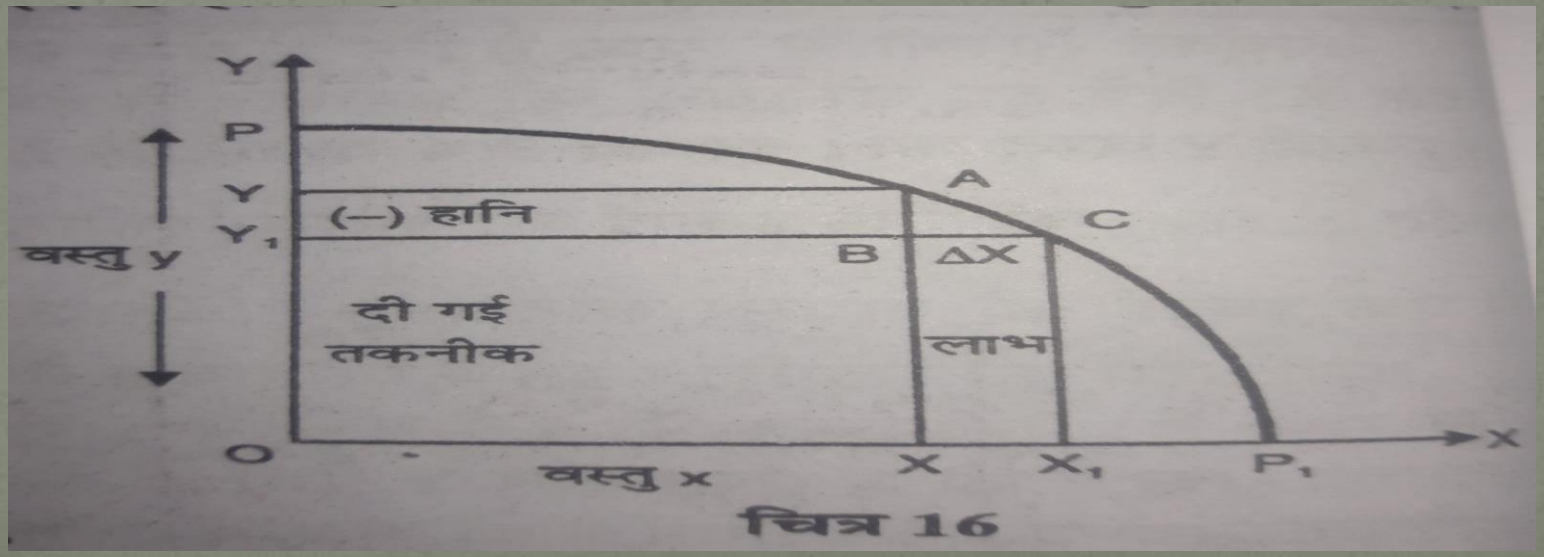

चित्र 16

उत्पादन संभावना अनुसूची तथा वक्र द्वारा अवसर लागत की धारणा का प्रतिपादन (DERIVATION OF OPPORTUNITY COST THROUGH PRODUCTION POSSIBILITY SCHEDULE AND CURVE): A, B, C, D, E, F, G विभिन्न संभावना को दर्शाता है जो दिए हुए संसाधनों एवं तकनीकी द्वारा उत्पादित है | इन सभी बिन्दुओं को जोड़ने पर PPC वक्र की प्राप्ति होती है |स्पष्ट है कि उत्पादन संभावना वक्र से हमें यह पता चलता हैकि यदि हम A वस्तु की मात्रा बढाना चाहते हैं तो हमें B वस्तु की मात्रा का परित्याग करना पड़ेगा| अतः अवसर लागत की धारणा का आधार ही त्यागी जाने वाली वस्तु या अवसर का विकल्प है |

संयोग/ संभावना	वस्तु X	वस्तु Y	सीमांत प्रतिस्थापन्न दर MRSxy = $\Delta y/\Delta x$	सीमांत अवसर लागत (वस्तु A में वृद्धि के लिए वस्तु B का त्याग)
A	0	15	-	-
B	1	14	1/1=1	1
C	2	12	2/1=2	2
D	3	9	3/1=3	3
E	4	5	4/1=4	4
F	5	0	5/1=5	5

उत्पादन संभावना वक्र या सीमा द्वारा अवसर लागत की अवधारणा को निम्नांकित रेखाचित्र के द्वारा समझा जा सकता है:

(GRAPHICAL REPRESENTATION OF CONCEPT OF OPPORTUNITY COST THROUGH PRODUCTION POSSIBILITY CURVE OR PRODUCTION POSSIBILITY FRONTIER)

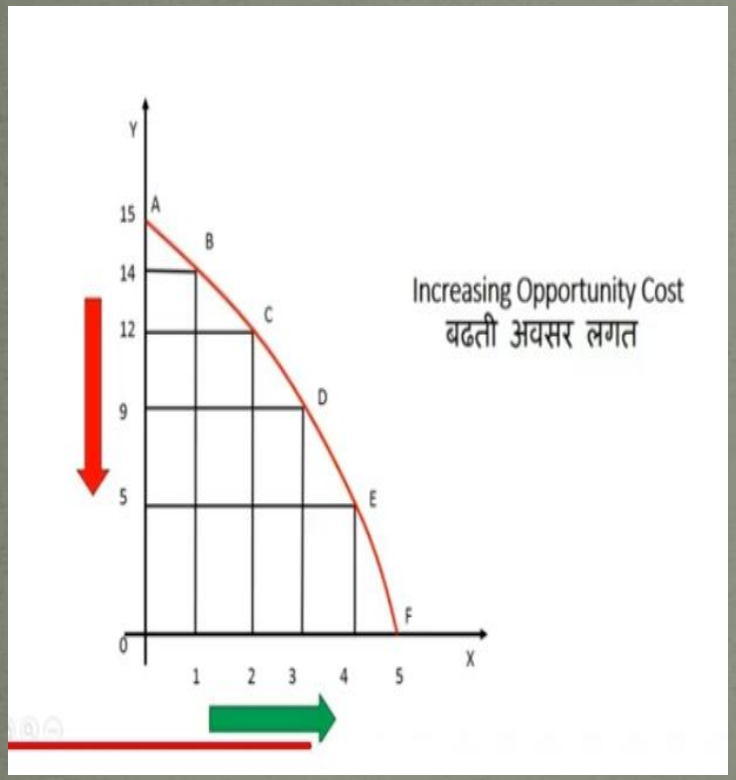

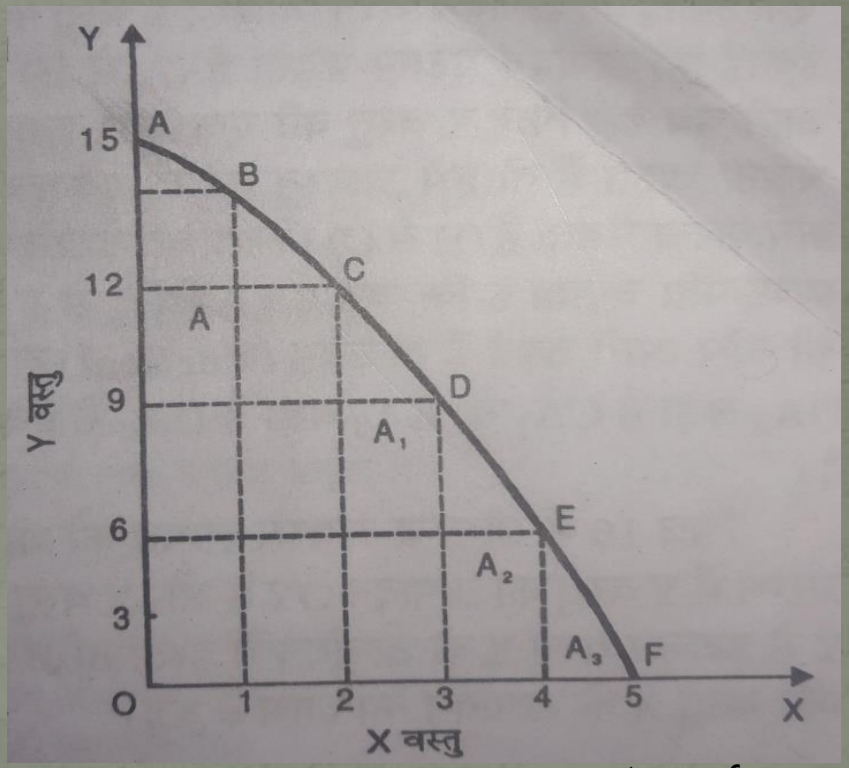

चित्र से स्पष्ट है कि उत्पादन संभावना वक्र AF बदती अवसर लागत को दर्शा रहा है जहाँ x वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के लिए वह उतरोत्तर(लगातार) Y वस्तु की अधिक से अधिक इकाईयों का परित्याग कर रहा है |

संकेत के रूप में ; AB<CA1<DA2<EA3

सन्दर्भ (REFERENCES):

1. अर्थशास्त्र – सी .सिंह एवं डॉ अनुपम अग्रवाल SBPD पब्लिकेशन |
2. अर्थशास्त्र – डॉ एम्.के .गुप्ता , चित्रा पब्लिकेशन |
3. अर्थशास्त्र–व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–डॉ बी.सी. सिन्हा व डॉ रितिका सिन्हा SBPD पब्लिकेशन |
4. अर्थशास्त्र के सिद्धांत – प्रो के .पी .जैन एवं डॉ . अंजू जैन (नवयुग साहित्य सदन)
5. उच्चतर आर्थिक सिद्धांत –एच .एल .आहूजा (एस .चाँद एंड कम्पनी लि.)
6. NCERT पाठय पुस्तक कक्षा -12
7. व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत : डॉ जे .पी. मिश्रा (न्यू एडिशन २०२१ .राष्ट्रीय शिक्षा नीति,2020 के अनुरूप ,साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा)
8. पॉल .ए .सेम्युल्सन : अर्थशास्त्र